नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय में मराठी भाषा दिवस

भाषा को रोजगार, विकास, आत्म-सम्मान से जोड़ना आवश्यक -डॉ. श्रीपाद भालचंद्र जोशी

वर्धा दि. 8 मार्च 2016: किसी भी भाषा के अस्तित्व को बचाए रखने के लिए उस भाषा को रोज़गार, विकास एवं आत्म-सम्मान से जोड़ना आवश्यक है। वर्तमान समय तकनीक के सहारे से भाषा के आगे चल रहा है, ऐसे में भारतीय ही नहीं अपितु विश्व की भाषाओं के सामाने अपने अस्तित्व के खतरें मंडरा रहे हैं। भाषाओं को अब भाषिक वंशवाद के संकट को भी झेलना पड़ रहा है। उक्त विचार सुविख्यात कवि तथा साहित्य, संस्कृति एवं कला समीक्षक डॉ. श्रीपाद भालचंद्र जोशी, नागपुर ने व्यक्त किये। वे वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में सोमवार, सात मार्च को आयोजित मराठी भाषा दिवस के कार्यक्रम में 'मराठी भाषा का वर्तमान और भविष्य' विषय पर बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की।

इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, यशवंत महाविद्यालय, सेलु के प्राध्यापक एवं पत्रकार राजेंद्र मुंढे मंचासीन थे। विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में मराठी भाषा दिवस का आयोजन किया गया था। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि डॉ. भालचंद्र जोशी ने आगे कहा कि यदि भाषा नष्ट होती है तो उसके साथ-साथ हमारी संस्कृति, उस भाषा को बोलने वाला समाज और उसकी

धरोहर भी नष्ट होती है। जब तक भाषा की उपयोगिता मीडिया, सिनेमा, साहित्य और प्रशासन के स्तर पर नहीं बढ़ेगी तब तक कोई भी भाषा अपने को बचाने में सक्षम नहीं हो सकती। भाषा का संबंध लोकसत्ता, रोजी रोटी और जीवन से होता है और इच्छा शक्ति के बल पर ही वह आगे बढ़ सकती है। यूनेस्को की रिपोर्ट का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि करीब छह हजार भाषाओं में से लगभग तीन हजार भाषा और बोलियों की प्रजातियां नष्ट होने की कगार पर है। उन्होंने अंगरेजी भाषा का संदर्भ लेते हुए कहा कि लोगों की क्षमता और सामर्थ्य को नष्ट करने के लिए भाषा को लादा जा रहा है और यह संकट मराठी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के समक्ष भी खड़ा हुआ है। डॉ. जोशी ने अपने वक्तव्य में मराठी के नाम पर विश्वविद्यालय स्थापित करने, न्यायालयों में मराठी का प्रयोग करने, भाषा नीति और भाषा विकास के लिए किये जा रहे प्रयास आदि मुद्दों को भी समाहित किया।

अध्यक्षयीय उदबोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि भाषांओं को समृद्ध बनाने के लिए उसका संबंध अभिव्यक्ति, संस्कृति और निस्पादन के साथ जोड़ना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि अन्य भाषाओं के सामने जो संकट हैं वेसे ही हिंदी के सामने भी है। मराठी साहित्य की समृद्धि का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मराठी का साहित्य बहुत समृद्ध है। दिवाली के उपलक्ष्य में प्रकाशित

होने वाले विशेष अंक इसका उत्तम उदाहरण है। इस तरह का प्रयोग किसी अन्य भाषाओं में कम ही दिखता है। इस भाषा का साहित्य भारतीय साहित्य की में अहम है। विजय तेंदुलकर के नाटक हो या विष्णु वामन शिरवालकर के उपन्यास, इस भाषा की संस्कृति की जिवंतता अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने कहा कि हम विश्वविद्यालय में भक्ति साहित्य का उच्च अध्ययन केंद्र स्थापित करना चाहते हैं और उसमें मराठी को भी उचित स्थान दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि भारत का दिल सभी भारतीय भाषाओं में धड़कता है, हम भारतीय भाषा के करीब आना चाहते है और यह केंद्र इसी का एक महत्वाकांक्षी प्रयास होगा। संस्कृत और मराठी की निकटता पर उन्होंने कहा कि इस भाषा को सुनकर

एक प्रकार के रसास्वादन का अनुभव किया जा सकता है।

मराठी भाषा दिवस की पृष्ठभूमि रखते हुए प्रा राजेंद्र मुंढे का कहना था कि मराठी भाषा को करीब दो हजार वर्ष का इतिहास प्राप्त है। तेरहवी शताब्दी में मराठी भाषा को ग्रंथ के रूप में पहचान मिली और यह विकसित होती चली गयी। कवि कुसुमाग्रज यानी विष्णु वामन शिरवालकर के जन्म दिवस 27 फरवरी को मराठी भाषा दिवस मनाया जाता है। उन्होंने विश्वविद्यालय पिछले चार वर्षों से लगातार मराठी भाषा दिवस को आयोजित कर रहा है और यह सराहनीय प्रयास है। उन्होंने भाषा को

इस प्रकार से सम्मानित करने के लिए कुलपति और विश्वविद्यालय के प्रति आभार भी जताया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

प्रारंभ में डॉ. श्रीपाद भालचंद्र जोशी का कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने तथा प्रा. राजेंद्र मुंढे का कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने चरखा और शॉल प्रदान कर सम्मान किया। कार्यक्रम का प्रास्ताविक एवं संचालन जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे ने किया। आभार प्रा. सुषमा लोखंडे ने माना तथा मराठी में एक कविता भी प्रस्तुत की। कार्यक्रम में प्रदर्शनकारी कला विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृपा शंकर चौबे, विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, दूरशिक्षा निदेशालय में सहायक प्रोफेसर शैलेश मरजी कदम, वर्धा के समाजसेवी प्रदीप दाते, अनुवाद अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, सहायक प्रोफेसर डॉ. राकेश मिश्र, राजेश लेहकपुरे, सहायक कुलसचिव डॉ. राजेश्वर सिंह आदि सहित विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यार्थी गोदावरी ठाकुर, प्रिया माली, किरन खंडेराव तथा कर्मी हिमांशु नारायण, किशोर जाधव, मनोज मानापुरे, दीपक सालवे, सचिन नाखले आदि ने प्रयास किये।